International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-03-2026, Accepted: 07-04-2026, Published: 22-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 83-85

देश के राष्ट्र निर्माण में द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का अवदान

डॉ. मुमताज़ परवीन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, कला एवं मानविकी संकाय आइएसबीएम विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
प्रत्येक रचनाकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को आईना दिखाने के साथ–साथ एक नई दिशा भी प्रदान करता हैं, जिससे समाज का उद्धार हो सके और इस अभिव्यक्ति का माध्यम जनभाषा हो तो समझो सोने पर सुहागा। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होती बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा साहित्यिक योगदान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों ने अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' ऐसे ही साहित्यकार थे, जिनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, सामाजिक जागरण, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना का सशक्त स्वर दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में उनके साहित्यिक योगदान तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रचेतना, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, अंग्रेजों के प्रति आक्रोश, भाईचारा, स्वच्छता, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक जागरण

साहित्य के क्षेत्र में भारतेंदु जी ने सर्वप्रथम राष्ट्र भावना का शंखनाद किया, जिसे परतंत्र भारत के राजनीतिक चेतना की जागरूकता कुंजी कह सकते हैं। विप्र जी का लेखन काल स्वतंत्रता से पूर्व और बाद दोनों का रहा। विप्र जी प्रारंभ में हिन्दी और ब्रज भाषा में लिखते थे बाद में छत्तीसगढ़ी जन भाषा में लिखना प्रारंभ किये और जनपदीय भाषा के रचनाकार कहलाए आपकी कविता में भारतेंदु और द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्ति देखने को मिलती हैं विप्र जी के काव्य में हास्य एवम देशभक्ति की स्पष्ट झलक देखने को मिलती हैं।

जनपदीय साहित्य का मतलब गाँव के साहित्य से हैं। जनपद का आधुनिक अर्थ गाँव और राष्ट्र के बीच की इकाई हैं। प्रायः ग्रामवासियों के ह्रदय में अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम की भावना देखने को मिलती हैं और यही प्रेम, राष्ट्र प्रेम हैं। क्यूंकि भिन्न–भिन्न ग्राम शहर का, भिन्न–भिन्न शहर राज्य का और भिन्न – भिन्न राज्य एक स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करते हैं। राष्ट्र के निर्माण में छत्तीसगढ़ राज्य का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा का जन्म लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व हुआ था या यूँ कह सकते हैं, कि हिन्दी भाषा के समानांतर ही छत्तीसगढ़ी भाषा का जन्म हुआ। छत्तीसगढ़ी काव्य भी अपनी मिटटी के प्रति अटूट प्रेम अर्थात् मातृभूमि के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करती हैं। जनपदीय भाषाओँ में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मगही, मैथिली और छत्तीसगढ़ी आदि प्रमुख भाषा हैं जिन से साहित्य समृध्द हुआ। जनपदीय कवि द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का जन्म 6 जुलाई 1908 ई. को जूना बिलासपुर में हुआ। विप्र जी की शिक्षा बिलासपुर में हुई फिर आप सहकारी बैंक में कार्यरत हो गये। आपकी पहली छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह 'कुछु काहीं' 1934 ई. में प्रकाशित हुई जिसमें मात्र १० गीत ही संकलित थे। इसके पश्चात् सुराज गीत, गाँधी गीत ,योजना गीत, फाल्गुन गीत, डबकत गीत आदि अन्य रचनाएँ भी आई । आपकी रचनाओं के मुख्य विषय प्रेम, शृंगार और राष्ट्रीयता हैं । एक ओर उन्होंनें 'धन धन रे मोर किसान' नामक कविता में किसान को इस भुइयां का भगवान कहा वही दूसरी ओर गाँव के परिदृश्य का चित्रण किया। आपके गीत लोकधुन में रचे–बसे नये आयाम का सन्देश देते हैं ।

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के जीवन और व्यक्तित्व का अध्ययन, उनके साहित्यिक कृतित्व का विश्लेषण, राष्ट्र निर्माण से संबंधित उनके विचारों का विवेचन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास में उनकी भूमिका का मूल्यांकन, आधुनिक संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन हैं। प्राथमिक स्रोत के रूप में 'विप्र' जी की रचनाएँ और द्वितीयक स्रोत के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध आलेख, हिंदी साहित्य का इतिहास आदि आधार पुस्तक शामिल हैं ।

मूल–आलेख

विप्र जी के लिए श्यामलाल चतुर्वेदी जी का कथन हैं कि – "बिलासपुर अंचल में आज जो साहित्यिक चेतना का स्वरुप दिखाई दे रहा हैं उसका सर्वाधिक श्रेय दिए जाने का प्रश्न प्रस्तुत हो तो पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का नाम एक स्वर से लिया जायगा ।"[1] वहीं डॉ महेश कुमार जोशी ने कहा कि – "पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' छत्तीसगढ़ के भारतेंदु हैं। "[2] छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित गीतों के प्रति लोगो का रुझान और सम्मान की दृष्टि वह नहीं थी, जो तत्कालीन अन्य भाषा – भाषियों की थी। छत्तीसगढ़ी कविता को उपेक्षा की शिकार होती देख विप्र जी को बड़ा दुखानुभव हुआ और आपने कहा कि – "मेरे छत्तीसगढ़ी भाइयों से मेरी विनती हैं, कि हमारे भाषा में जब तक भिन्न–भिन्न पुस्तकें नही लिखी जायगी तब तक हमारा साहित्य पीछे ही रहेगा ।"[3] जनपदीय भाषा का तिरस्कार आपकी दृष्टि में कांटे की तरह चुभी और कालान्तर में हिन्दी के छंदों की तुलना में छत्तीसगढ़ी काव्य के अंतर्गत सुआ, करमा, लहकी आदि छंदों में काव्य का सृजन किया। विप्र जी ने कर्म को ही धर्म कहा अर्थात जब तक कठिन परिश्रम नही करेंगे तब तक राष्ट्र की उन्नति नही हो सकती विप्र जी का मानना था, कि जब तक राष्ट्र की उन्नति नही होगी तब तक व्यक्ति की उन्नति नहीं हो सकती क्यूंकि व्यक्ति की अस्मिता ही राष्ट्र में निहित हैं। हिन्दी के स्वछंदतावादी काव्य धारा में जो प्रवृत्ति देखने को मिलती हैं वही प्रवृत्ति छत्तीसगढ़ी काव्य में भी विद्यमान है, क्यूंकि अंचल और भाषा भिन्न थी परन्तु राष्ट्र तो वही था। भारत को स्वतंत्र कराने में जिन महापुरुषों का अमूल्य योगदान हैं उसकी भी चर्चा विप्र जी ने किया। विप्र जी ने छत्तीसगढ़ के तीर्थस्थल, नदियाँ, साहित्यकार, उद्योग आदि का जिक्र 'छत्तीसगढ़ महतारी' नामक गीत में किया हैं। गाँव के परिदृश्य का, गाँव के स्वरुप का, राष्ट्र के निर्माण में किसान की भूमिका, स्वराज्य प्रेम, महापुरुष के प्रति

आदर भाव आदि का बड़े ही सरल शब्दों में चित्रण देखने को मिलता हैं ।

स्वतंत्रता से पूर्व भारत में विदेशी शक्तियों का राज था 'सोने की चिड़िया' के नाम से प्रसिध्द भारत को विदेशियों द्वारा हर लिए जाने का दुःख तो दूसरी ओर विप्र जी का जन्मभूमि के प्रति प्रेम झलकता हैं। छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' के नाम से जाना जाता था। यह कहना अतिश्योक्ति नही कि धन रूपी रत्न तो अंग्रेजों ने लूट लिए परन्तु साहित्यकार रुपी रत्न लूटना अंग्रेजों के वश में नहीं । ये भाव निम्न पंक्तियों द्वारा व्यक्त हैं –

"हमर देस के अन ला जन ला
धान ल जम्मो लुटिन
परदेसियन के लडवाए ले
भाई से भाई छुटिन
देस ल करके निच्चट निहत्था
उल्टा मारय सेखी" [4]

कवि ने 'सूरज के सुवागत' गीत में देश के प्रति प्रेम, संस्कृति का चित्रण, परतंत्रता के पिंजरे से मुक्ति की बात कही हैं। आपने 1935 ई. में सरयू प्रसाद त्रिपाठी के साथ मिलकर बिलासपुर में 'भारतेंदु साहित्य समिति' का गठन किया और इस अधिवेशन में डॉ रामकुमार वर्मा, बलदेव प्रसाद मिश्र और डॉ हरिवंशराय बच्चन जैसे मशहूर साहित्यकार सम्मिलित हुए। हर शाम आपके घर के प्रांगण में साहित्यिक प्रेमियों की भीड़ लगी रहती। बचपन से ही आपका स्वभाव लोक–परंपरा और लोक संस्कृति से प्रभावित था और यही लोक परंपरा, लोक संस्कृति राष्ट्र की अस्मिता होती हैं। हमारे भारतीय संस्कृति में विभिंन्नता देखने को मिलती हैं यही विभिन्नता ही भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। 'गाँधी देवता' कविता में भारत को स्वतंत्र कराने में और स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करने में गाँधी जी के अतुलनीय योगदान का चित्रण देखने को मिलता हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का गौरवपूर्ण चित्रण मिलता है। उन्होंने सांस्कृतिक एकता को राष्ट्रीय एकता का आधार माना। उनके विचारों में संस्कृति और राष्ट्र एक–दूसरे के पूरक हैं।

ईश्वर प्रदत्त काव्य सृजन कला में पारंगत विप्र जी के कलम ने अध्यापक को भ्रमवश एक थप्पड़ मारने का प्रायश्चित करा दिया। बाल्यावस्था से ही पराधीन भारत का दृश्य विप्र जी के मन को विचलित करता रहा। द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत की। उनकी रचनाएँ स्वतंत्रता, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देती हैं। उन्होंने युवाओं को देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। १९२० ई.में हुए कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होना विप्र जी के लिए कारगर सिध्द हुआ और आप राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत कविताओं की रचना करने लगे परन्तु उन कविताओं की भाषा हिन्दी थी। इसमें विदेशी आक्रमक के प्रति आक्रोश जैसे जलियांवाला बाग कांड के दृश्य को बयां करती दो पंक्तियाँ –

'इस कायर डायर हत्यारे को
शर्म न बिलकुल आयी थी
निर्दोष जनता पर इसने
दस मिनट गोलियां ढाई थी' [5]

यह रही पराधीन भारत का दर्शन कराती राष्ट्रीय काव्य धारा की कविता। विप्र जी ने भारत के स्वतंत्र होने के बाद जो कविताएँ लिखी उन कविताओं में उन्नति के भिन्न–भिन्न सोपानों को चिन्हित किया हैं जो स्वतंत्र भारत के नव निर्माण में सहायक सिध्द हुए । सरकार द्वारा प्रदत्त योजनाओं का प्रचार–प्रसार भी उनकी 'पंचवर्षीय योजना गीत' (१९६१) और क्रांति प्रवेश (१९५७) काव्य संग्रह में देखने को मिलती हैं। इस गीत में कृषि उत्पादन, रोजगार, गरीबी उन्मूलन और न्याय के प्रति लोगों को जागरूक करने के स्वर हैं जो देश के नव निर्माण के आवश्यक तत्व हैं। यह योजना पंडित जवाहरलाल नेहरु ने प्रारंभ किया था।

सुराज के करमा गीत में स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर प्रसन्नता प्रकट की हैं। सभी को मिलजुल कर रहने का सन्देश निहित हैं। सुराज के गम्मत गीत में देश की उन्नति पर चर्चा हैं और भिन्न भिन्न राष्ट्र को एकजुट कर भारत को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पहचान दिलाने का प्रयास दिखाई देता हैं। विप्र जी ने जो अनुभूति की, जो देखा उसे ही काव्य के रूप में अभिव्यक्त किया। आप अलौकिक नही लौकिक प्रेम की बात करते हैं चाहे वह प्रेम हो या राष्ट्रीयता। राष्ट्र निर्माण में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। 'विप्र' जी ने अपने साहित्य में सत्य, अहिंसा, त्याग और सेवा जैसे मूल्यों को प्रमुखता दी। उन्होंने समाज को नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया। द्वितीय विश्वयुध्द में भिन्न–भिन्न देशों की भूमिका और राजनैतिक स्थिति का उल्लेख भी 'आज तुम रूठो न रानी' कविता में देखने को मिलता हैं। 'दीदी से गोठ' कविता में राष्ट्र के नव निर्माण हेतु स्त्रियों के समर्थन की पहल की हैं –

"बिगड़े काम बनाये खातिर, देस म नाम कमाए खातिर
तुहर मदद के भईस जरुरी, तेखर सेती ऐ गोठ ओ
अब सुनिहा दिदी हमार एक ठन गोठ हो ।"[6]

उनके साहित्य में सामाजिक कुरीतियों के विरोध का स्वर मिलता है। उन्होंने जातिवाद, अशिक्षा और अंधविश्वास जैसी समस्याओं के विरुद्ध लेखन किया। सामाजिक समानता और भाईचारे का संदेश उनके राष्ट्र निर्माण दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा था।

'हम गाँव ला अपन बढ़ाबो गा' गीत में गाँव के उन्नति के साथ स्वच्छता निकासी और गाँव को सुन्दर बनाने का उपाय बता रहे हैं –

"खोर गली ला चाकर करके, घर के नाली मिलाबो गा
दुवरा बाहिर डेहरी चढ़ के, घर माँ आबो जाबो गा
अंगना बिच माँ चौरा बना के, तुलसा पेड़ लगाबो गा
घुरुवा गाँव के बाहिर करके कचरा माटी डालबो गा
कोला पोखरी बाहिर माँ जाबो, हाथ गोड़ मटीयाबो गा
संझहा सुघ्घर ओढ़ना पहिरे, गुड़ी डहर फिर जाबो गा ।।" [7]

इस गीत में एक ही गाँव नही बल्कि देश के सम्पूर्ण गाँव के विकास की बात कही हैं –

"हमर देस माँ गाँव गाँव है, ओही माँ चेत लगाबो गा,
जम्मो गाँव ला खुबिच बढ़ाके दुनिया ला दिखलाबो गा"[8]

'विप्र' जी ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण की शक्ति माना। एक स्थान पर वे कहते हैं–

"युवा उठो, नव चेतना लेकर, परिवर्तन का गीत सुनाओ,
अपने श्रम से भारत माता का नव भविष्य बनाओ।"[9]

इस प्रकार वे युवाओं को राष्ट्र निर्माण का सक्रिय सहभागी बनाते हैं।

'विप्र' जी का मानना था कि राष्ट्र निर्माण का आधार शिक्षा है। उन्होंने अपने लेखन में शिक्षा को समाज के उत्थान का माध्यम बताया। वे शिक्षित समाज को प्रगतिशील राष्ट्र की पहचान मानते थे। सुरक्षा, शिक्षा और स्वस्थ रहने हेतु कसरत की बात कही हैं

"लइकन ला अब बने पढ़ाबो कसरत घलो सिखाबो गा
जम्मो डहर ले निडर बनाके, फ़ौज सिपाही बनाबो गा
अपन देस के रखवाली हम करके संहिच दिखाबो गा सस" [10]

वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक परिवर्तन की चुनौतियाँ सामने हैं, तब 'विप्र' जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। उनकी रचनाएँ क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय एकता से जोड़ती हैं। आज के समय में यह दृष्टि सामाजिक समरसता को मजबूत करती है। किसान जैसी रचनाएँ कृषि और ग्रामीण जीवन को राष्ट्र की नींव बताती हैं। यह दृष्टिकोण आज भी आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा से जुड़ा हुआ है। 'विप्र' जी भारतीय संस्कृति को राष्ट्रीय पहचान का आधार मानते हैं। आधुनिक समय में सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण राष्ट्र की पहचान बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उनके साहित्य में शिक्षा को प्रगति का साधन बताया गया है। वर्तमान ज्ञान–आधारित समाज में यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन आवश्यक है। 'विप्र' जी का साहित्य इस दिशा में प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः विप्र जी ने लगभग ५ दशक के लेखनकाल में उन सभी मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला हैं जिसमें देश के नव निर्माण की बात तो निहित हैं परन्तु साथ ही साथ 'विभिन्नता में एकता' के वह सभी गुण विद्यमान हैं जो एक देश के राष्ट्र को सशक्त और प्रबल बनाने में सहायक होती हैं। जहाँ एक ओर परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने के लिए देश के नवजवानों को जागृत किये वहीँ दूसरी ओर स्वतंत्र भारत की गरिमा को बनाये रखने की बात कहकर राष्ट्र की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। हिन्दू–मुस्लिम भाईचारे का सन्देश, राष्ट्र की उन्नति में स्त्रियों का योगदान, स्वच्छता, कृषि, बेरोजगारी निवारण आदि छत्तीसगढ़ी साहित्य के मूल स्वर हैं। विप्र जी की प्रत्येक रचना राष्ट्रीयता और उन्नति का दर्शन कराती हैं। राजनीति के क्षेत्र में विप्र जी शिक्षित लोगो के पक्षधर हैं, क्योंकि कवि का मानना हैं कि सुन्दर राज्य की स्थापना शिक्षित वर्ग द्वारा ही संभव हैं। इस प्रकार आपकी गिनती जनप्रतिनिधि कवि और राष्ट्रप्रेमी के रूप में की जा सकती हैं। अतः स्पष्ट है कि द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' ने अपने साहित्य के माध्यम से जनचेतना को जागृत कर राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका लेखन समाज को एकता, परिश्रम, नैतिकता और सांस्कृतिक गौरव के मार्ग पर अग्रसर करने वाला प्रेरक स्रोत है।

सन्दर्भ संकेत

1. संपा.आदर्श डॉ ब्रजभूषणसिंह, परिहार प्रो.परमेश्वर सिंह छत्तीसगढ़ की विभूतियाँ एवम् लौकिक प्रसून, छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक मंडल बी.एच.ई.एल.भोपाल,प्र.सं. : 1969, पृ.क्र. 232।
2. वही, पृ.क्र.238।
3. संपा. रमण शांडिल्य, जनपदीय भाषाओँ का साहित्य, साहित्य प्रकाशन, नई सड़क–मालीवाड़ा ,दिल्ली, पृ.क्र.40।
4. संपा. पाठक विमल कुमार, छत्तीसगढ़ी जागरण गीत, प्रयास प्रकाशन, पचरी घाट, बिलासपुर, एम.पी., प्र.सं.रू1 मई 1978।
5. वही, पृ.क्र.2।
6. वही, पृ.क्र.3।
7. संपा.तिवारी नन्द किशोर, छत्तीसगढ़ी लोकाक्षर (त्रैमासिक पत्रिका), विप्र रचनावली विशेषांक,अंक–40, जनवरी–मार्च,सन –2008, बिलासपुर।
8. वही, पृ.क्र.18।
9. वही, पृ.क्र.20।
10. वही पृ.क्र.25।